कविता की फकीरी के झरोखे से : रमाशंकर यादव विद्रोही

सुशील कुमार शैली

कविता फकीरी है तो कवि फकीर है। फकीर के फकीरपन की पहचान उसकी फकीरी से ही की जा सकती है। फकीरी के बिना फकीर का अस्तित्व ही क्या है ? कविता के बिना कवि का अस्तित्व ही क्या है ? कविता ही कवि के दृष्टिकोण, उसके विचारों की, उसके स्वप्नों की वाहक है। कविता और फकीरी के केन्द्र में मानव होता है, मानवीय जिजीविषा होती है, मानवीय शोषण से लड़ने का अदम्य साहस होता है। मानवीय जिजीविषा, शोषण से लड़ने का यही साहस हमें रमाशंकर यादव विद्रोही के कवित में मिलता है। विद्रोही का सम्पूर्ण जीवन ही फकीर का जीवन है जिसमें कबीर की भांति चारो युग के महात्मा 'मुखही जनाई बात' की उक्ति सार्थक है। जिसके लिए न तो धन का कोई महत्व था, न ही काव्यगत सम्मान का झूठा मोह। अपनी कविता और व्यक्तित्व के माध्यम से जेएनयू जैसे विश्वविद्यालयों में छात्रों के बीच अपनी एक विशिष्ट पहचान बना चुके विद्रोही के लिए उसके असूल, उसकी विचारधारा ही प्रमुख थी। विद्रोही के इसी फकीरी व्यक्तित्व को हम उनकी कविताओं के माध्यम से जानने का प्रयत्न करेंगे। विद्रोही के लिए कविता एक सजग लाठी है जो न्याय और अन्याय के बीच अंतर करना जानती है, जो शोषण, दमन के कुचक्र को पहचानती है। जो शोषक को भांजती है। 'कविता और लाठी' नामक अपनी कविता में विद्रोही अपनी कविता के बारे में कहते हैं-

ये वो लाठी नहीं है जो
हर तरफ भंज जाती है,
ये सिर्फ उस तरफ भंजती है
जिधर मैं इसे प्रेरित करता हूं।
मसलन तुम इसे बड़ों के खिलाफ भांजोगे/ भंज जाएगी।
छोटों के खिलाफ भांजोगे/ न, नहीं भंजेगी।
तुम इसे भगवान के खिलाफ भांजोगे, भंज जाएगी।
लेकिन तुम इसे इंसान के खिलाफ भांजोगे / न, नहीं भंजेगी।
कविता और लाठी में यही अंतर है।

विद्रोही की कविता की यही अलग पहचान है कि वह शोषकों और सदियों से शोषण का माध्यम रहे भागवान दोनों को माफ नहीं करती। लेकिन यही कविता कवि की खेती भी है जिसे वह अपने बेटा, बेटी की तरह स्नेह व श्रम से पालता है और कविता की खेती करता है। अपनी एक कविता 'परिभाषा' में लेखक ऐसा ही भाव प्रकट करता है -

'कविता क्या है
खेती है,
कवि के बेटा.बेटी है,
बाप का सूद है, मां की रोटी है।

विद्रोही उन विरले कवियों में से हैं जो कविता में न तो केवल प्रश्न करते हैं, न ही केवल प्रश्नों का उत्तर देते हैं। वे कविता कहते हैं। वे स्वयं ही अकबर और बीरबल हैं, जो अपने इतिहास को, ऐतिहासिक परिस्थितियों को, उन परिस्थितियों से उपजे वर्तमान और वर्तमान से निकलने वाले भविष्य पर मंथन करते हैं।

न तो मैं सबल हूं,
न तो मैं निर्बल हूं,
मैं कवि हूं।
मैं ही अकबर हूँ, मैं ही बीरबल हूँ।

यह मंथन लेखक की आशावादी से प्रेरित है। जिसे अपने पर अटल विश्वास है, जन संघर्षों पर विश्वास है। जन संघर्षों के स्वप्न 'समतामूलक समाज' पर विश्वास है। जिसकी अदम्य इच्छा है कि मौत भी उसे तब आए जब शोषकों का दमन हो जाए और देश में वसंत आ जाए, आमों पर बौर आ जाए। 'जन-गण-मन, कविता में लेखक अपनी इसी उद्धेश्य की अभिव्यक्ति करता है-

"किन मैं चाहता हूं
कि पहले जन-गण-मन अधिनायक मरें
फिर भारत भाग्य विधाता मरें
फिर साधू के काका मरें
यानी सारे बड़े.बड़े लोग पहले मर लें
फिर मैं मरूं. आराम से
उधर चल कर वसंत ऋतु में
जब दानों में दूध और आमों में बौर आ जाता है

या फिर तब जब महुवा चूने लगता है
या फिर तब जब वनबेला फूलती है
नदी किनारे मेरी चिता दहक कर महके
और मित्र सब करें दिल्लगी
कि ये विद्रोही भी क्या तगड़ा कवि था
कि सारे बड़े.बड़े लोगों को मारकर तब मरा।

जन संघर्ष की कविता भाषा और भाव के फरेब से मुक्त होती है तभी उसे जन की स्वीकृति मिलती है। सत्ता के डर से कुछ कवि जहाँ जन संघर्षों को अपने तरफ आकर्षित करने के लिए कविता में प्रतीक और भाषा का फरेब रचते हैं वहाँ विद्रोही जैसे कवि लोक भाषा में अपनी बात बिना किसी लाग-लपेट के कहने का साहस करते हैं। यह साहस इतना दृढ़ है कि वो ज़मीन से भगवान को उखाड़ सकता है और आसमान में धान उगा सकता है –

मैं किसान हूँ
आसमान में धान बो रहा हूँ
कुछ लोग कह रहे हैं
कि पगले! आसमान में धान नहीं जमा करता
मैं कहता हूँ पगले ! अगर ज़मीन पर भगवान जम सकता है
तो आसमान में धान भी जम सकता है
और अब तो दोनों में से कोई एक होकर रहेगा
या तो ज़मीन से भगवान उखड़ेगा ध् या आसमान में धान जमेगा।

विद्रोही एक अहीर कवि थे। जिसके लिए दुनिया उसकी भैंस है, जिसे वह दुह रहा है, शोषण, कुचक्र के प्रति सचेत कर रहा है लेकिन सत्ताधारी शोषण व्यवस्था के पोशकों को उसका यह कार्य फूटी आँख नहीं सुहाता। वह जनता को ऐसे जन कवियों के विरुद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। लेखक के अनुसार इससे उस तीसरे व्यक्ति को कोई फ़र्क नहीं पड़ता जो सत्ता का सुख भोगता है। हर हाल में नुकसान जनता का ही होता है।

"लेकिन एक बात का पता
न हमको है न आपको न उनको
कि इस कुदाने का क्या परिणाम होगा ?
हाँ ! इतना तो मालूम है
कि नुकसान तो हर हाल में
खैर ! हमारा ही होगा
क्योंकि भैंस हमारी है
दुनिया हमारी है !"

लोककवि की चेतना का विस्तार किसी क्षेत्र, प्रदेश, वर्ग या देश विशेष तक सीमित नहीं होता उसकी चेतना तो लोक-मन की चितेरी होती है। विद्रोही ऐसे ही लोक-मन के चितेरे कवि हैं। जिसके लिए दुनिया कविता नहीं कहानी है उसकी भैंस है, उसकी नानी है जो आदमीयत का पेड़ है जिसका वह एक पत्ता है। कवि की इस भावना का विस्तार हमें 'नानी' नामक कविता में देखने को मिलता है –

"कविता नहीं कहानी है,
और ये दुनिया सबकी नानी है
पेड़ थी दोस्तों, मेरी नानी आदमियत की,
जिसका कि मैं एक पत्ता हूं।
मेरी नानी मरी नहीं है
वह मोहनजोदड़ो के तालाब में
स्नान को गई है
और अपनी धोती को
उसकी आखिरी सीढ़ी पर सुखा रही है।
उसकी कुंजी यहीं कहीं खो गई है,
और वह उसे बड़ी बेसब्री के साथ खोज रही है।
मैं देखता हूं कि मेरी नानी हिमालय पर मूंग दल रही है
और अपनी गाय को एवरेस्ट के खूंटे से बांधे हुए है"।

कवि की इस लोक चेतना का विस्तार वियतनाम, रोमन, सीरिया, काहिरा, कोम्बिया, अमेरिका, बंगाल से लेकर दुनिया के हर कोने तक है। क्योंकि हर जगह पर शोषण है, हर जगह पर अत्याचार है जिसके, कवि विरोध में खड़ा है .

"हर जगह ऐसी ही जिल्लत,
हर जगह ऐसी ही जहालत
हर जगह पर है पुलिस
और हर जगह है अदालत।
हर जगह पर है पुरोहित,
हर जगह नरमेध है,
हर जगह कमजोर मारा जा रहा है, खेद है"।

लेकिन कवि की ये कलम है, सरहदों के पार भी नगमे लिखे हैं। विद्रोही का यह खेद किसी निराशा की उपज नहीं है. यह तो जन क्रांति की चिंगारी है। विद्रोही पहले ऐसे कवि है जिन्होंने स्त्री के दोहरे शोषण को समझा और उसकी कविता के माध्यम से सामाजिक स्तर पर पड़ताल भी की। वे लिखते हैं-

'इतिहास में पहली स्त्री हत्या
उसके बेटे ने अपने बाप के कहने पर की
जमदाग्नि ने कहा कि - ओ परशुराम,
तुम परशुराम हो और अपनी माता का वध कर दो
और परशुराम ने कर दिया

इस तरह से पुत्र पिता का हुआ और पितृसत्ता आई'।

इस पितृसत्ता की पड़ताल में लेखक मोहनजोदड़ों के तालाब की आखरी सीढ़ी पर भी पहुँच जाते हैं जहाँ उन्हें एक औरत की जली हुई लाश मिलती है। स्त्री शोषण का यह दस्तावेज कवि को हर सभ्यता के मुहाने पर मिलता है चाहे वे बेबीलेनिया हो या मेसोपोटामिया। इस पितृसत्ता में स्त्री का घर में और घर से बाहर दोनों ओर शोषण हुआ और हो रहा है। जिसके बारे में रमाशंकर 'औरतें' कविता में पड़लात करता है-

"कुछ औरतों ने अपनी इच्छा से कूदकर जान दी थी
ऐसा पुलिस के रिकॉर्ड में दर्ज है
और कुछ औरतें अपनी इच्छा से चिता में जलकर मरी थीं
ऐसा धर्म की किताबों में लिखा हुआ है"।

लेकिन कवि इन धर्म की किताबों और सारी वसीयतों को ख़ारिज कर इतिहास में मरी सारी स्त्रियों के बयानात को दुबारा दर्ज करना चाहता है क्योंकि स्त्रियों का इतिहास के प्रारम्भ से लेकर अब तक दलन इन्हीं धर्म ग्रंथों के आधार पर किया गया है। कवि कहता है कि –

मैं एक दिन
पुलिस और पुरोहित दोनों को एक साथ
औरतों की अदालत में तलब करूँगा
और बीच की सारी अदालतों को मंसूख कर दूँगा।
औरतें

नीचे दी गई पंक्तियों में हमें कवि स्त्री शोषण के निदान के प्रति प्रतिबद्ध मिलता है-

"इतिहास में वह पहली औरत कौन थी
जिसे सबसे पहले जलाया गया,
मैं नहीं जानता
लेकिन जो भी रही हो मेरी माँ रही होगी,
मेरी चिंता यह है कि
भविष्य में वह आखिरी स्त्री कौन होगी
जिसे सबसे अंत में जलाया जाएगा,
मैं नहीं जानता
लेकिन जो भी होगी मेरी बेटी होगी
और यह मैं नहीं होने दूँगा"। (औरतें)

विद्रोही ऐसे धर्म और भगवान दोनों के विरुद्ध हैं जो शम्बूकों का गाँव उजाड़ देते हैं और एकलव्य से उसका अंगूठा माँग लेते हैं।

क्योंकि-
धर्म आखिर धर्म होता है
जो सूअरों को भगवान बना देता है,
चढ़ा देता है नागों के फन पर गायों का थन,
(धर्म)

जो व्यक्ति धर्म या भगवान पर संदेह करता है शोषण पर आधारित ये व्यवस्था उसे दण्ड़ देती है क्योंकि अदालतों में भी निर्णय इन्हीं पोथियों के आधार पर होते हैं। इसी लिए कवि 'तुम्हारा भगवान' नामक कविता में सारी व्यवस्था से प्रश्न करता हुआ कहता है कि-

"तुम्हारे मान लेने से
पत्थर भगवान हो जाता है
लेकिन तुम्हारे मान लेने से पत्थर पैसा नहीं हो जाता।
तुम्हारा भगवान पत्ते की गाय है,
जिससे तुम खेल तो सकते हो,
लेकिन दूध नहीं पा सकते"।

निष्कर्ष: हम कह सकते हैं कि रमाशंकर यादव विद्रोही की कविताओं में से गुजरना, उन्हें समझना इतिहास की सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्तर पर पुन: पड़ताल करना है। उन सभी अंध मान्यताओं, रूढ़ विश्वासों पर प्रश्न चिह्न लगाना है जो आदमी के द्वारा आदमी के शोषण का कारण रही। ऐसा साहस केवल विद्रोही ही कर सके। जिनके स्वभाव में हमें कबीर जैसा साहस कि- 'कबीरा खड़ा बाजार में लिए लुकाठी हाथ, कबीर जैसा फक्कड़पन, मस्तमौलापन, कविता की भाषा का विश्वास और ओज मिलता है।

ग्रंथ सूची:

विद्रोही, रमाशंकर यादव, नयी खेती, सांस्कृतिक सांकुल, जन संस्कृति मंच, इलाहाबाद 2011

संपर्क: सुशील कुमार शैली, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, एस.डी. कॉलेज बरनाला, पंजाब, मो . 9914418289
shellynabha01@gmail.com